नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा दिवस

पीढ़ियों का निर्माण है शिक्षकों का दायित्व: प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

भारतीय ज्ञान परंपरा और उसका वर्तमान संदर्भ विषय पर परिचर्चा

वर्धा, 13 नवंबर 2019: शिक्षा पद्धति ज्ञान की प्रकृति, शिक्षण के उद्देश्य, शिक्षक विद्यार्थी अनुपात, शिक्षा और समाज का संबंध, शिक्षा व्यवस्था के वित्त पोषण की दृष्टि से स्वायत्तता और स्वावलंबन की पक्षकार है। स्वतंत्रता और स्वावलंबन एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरे को नहीं प्राप्त कर सकते हैं। इन लक्ष्यों को साकार करने का जिम्मा भारत के शिक्षकों का है। वे केवल सरकार के कर्मचारी नहीं हैं।

उनकी जिम्मेदारी पीढ़ीयों के निर्माण की है। उन्हें नवाचारोन्मुख शिक्षा द्वारा प्रश्नाकुल मनस के निर्माण में योगदान करना होगा। उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (11 नवंबर) के अवसर पर **'भारतीय ज्ञान परंपरा और उसका वर्तमान संदर्भ' विषय पर** आयोजित **परिचर्चा** में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि स्वतंत्र भारत के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने शिक्षा के वर्तमान ढांचे की नींव रखी। इन्हीं के प्रयासों से प्रथम और द्वितीय पंचवर्षीय परियोजना में भारतीय शिक्षा की आधारभूत संरचना का विकास हुआ। प्रो. शुक्ल ने अपने व्याख्यान में चिंता प्रकट कि वर्तमान में शिक्षा कुशल उत्पादक और उपभोक्ता का निर्माण करने वाली प्रक्रिया बनती जा रही है जबकि भारतीय चिंतन परंपरा शिक्षा और जीवन के संबंध

को मजबूत बनाने पर बल देती है। शिक्षा जीवन को अर्थ देती है। मनुष्य में अपने लक्ष्य निर्मित करने और

साकार करने की क्षमता पैदा करती है। औपनिवेशिक संरचना वाली शिक्षा स्वतंत्र चेता और नवाचार करने वाले दिमाग तैयार नहीं कर सकती है वह केवल कुशल श्रमिकों की पूर्ति कर सकती है। भारतीय

शिक्षा को देखने का उपयोगितावादी नज़रिया इसके अर्थ को सीमित कर देता है। प्रो. शुक्ल ने धर्मपाल की पुस्तक 'ए ब्यूटीफुल ट्री' का संदर्भ लेते हुए कहा कि भारतीय शिक्षा पद्धति ज्ञान की प्रकृति, शिक्षण के उद्देश्य, शिक्षक विद्यार्थी अनुपात, शिक्षा और समाज का संबंध, शिक्षा व्यवस्था के वित्त पोषण की दृष्टि से स्वायत्तता और स्वावलंबन की पक्षकार है। स्वतंत्रता और स्वावलंबन एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरे को नहीं प्राप्त कर सकते हैं। इन लक्ष्यों को साकार करने का जिम्मा भारत के शिक्षकों का है।

वे केवल सरकार के कर्मचारी नहीं हैं। उनकी जिम्मेदारी पीढ़ीयों के निर्माण की है। उन्हें नवाचारोन्मुख शिक्षा द्वारा प्रश्नाकुल मनस के निर्माण में योगदान करना होगा।

व्याख्यान में विषय प्रवर्तन करते हुए शिक्षा विभाग के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार ने कहा कि हमें ज्ञान, कौशल और मूल्य को भारतीय परंपरा की दृष्टि से समझने की आवश्यकता है। हमें ज्ञान और

कर्म के बीच द्वैत को समाप्त करना आवश्यक है। बिना जमीनी सच्चाइयों को समझे शाश्वत विकास नहीं कर सकते हैं। आयोजन का संचालन ऋषभ कुमार मिश्र ने किया। धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती शिल्पी कुमारी द्वारा किया गया। इस अवसर पर अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, अध्यापक,शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

इस उपलक्ष्य में शिक्षा जागरूकता रैली निकाली गयी तथा पोस्टर निर्माण एवं निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गयी। पोस्टर प्रतियोगिता का विषय था- 'विकसित राष्ट्र की यही कल्पना, शिक्षित पूरे देश को करना'। इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार राजा कुमार मल्लिक, द्वितीय पुरस्कार पूजा कुमारी शाह, तृतीय पुरस्काय दूजा शाह और प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए अतुल खेस का चयन किया गया। निबंध लेखन प्रतियोगिता का विषय 'राष्ट्रीय मूल्यों के विकास में शिक्षा की भूमिका' था। कार्यक्रम के आयोजन में शिक्षा विभाग के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार, संकायाध्यक्ष डॉ. शिरीष पाल सिंह, ऋषभ कुमार मिश्र, शिल्पी कुमारी, सारिका राय शर्मा, समरजीत यादव धर्मेंद्र ना. शंभरकर, डॉ. सुहासिनी वाजपेयी, डॉ. तक्षा शंभरकर, डॉ. सरिता चौधरी, डॉ. रजनीश अग्रहरि तथा संजीव राज ने सक्रिय भूमिका निभायी।